ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI:UPBIL04292, REG. No.: 561/2013-2014 Vol.-1, No.-1, PP-258-262,YEAR-2014

दुधारू पशुओं के प्रमुख रोग : चिकित्सा एंव रोकथाम

❑ डॉ0 धर्मेन्द्र सिंह

दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में भारत विश्व में प्रथम स्थान पर है। इसकी उत्पादन दर तेजी से बढ़ रही है। तेजी से बढ़ती जनसंख्या के कारण पूरे विश्व में दुग्ध व दुग्ध पदार्थो की मांगे भी लगातार बढ़ती जा रही है। डेयरी व्यवसाय आजीविका का प्रमुख साधन रहा है। तथा भारत की कृषि अर्थव्यवस्था में इसका महत्वपूर्ण योगदान है। आज दुग्ध उत्पादन एक सफल डेयरी उद्योग के रूप में स्थापित हो चुका है। डेयरी व्यवसाय में सफलता के लिए उन्नत नस्ल,संतुलित आहार, स्वच्छ एंव आराम देह आवास प्रबन्धन के साथ पशुओं की उचित देखभाल व रोगों से बचाव बहुत आवश्यक है। कमजोर पशुओं में रोगों का प्रभाव अधिक हातेा है।

इसके लिए पशुओं को नियमित रूप से प्रतिदिन संतुलित एवं पौष्टिक चारा दाना दिया जाना चाहिए टीकाकरण पशुशाला की नियमित साफ–सफाई व समय–समय पर रोगाणु नाशक दवाइयों का प्रयोग करने से बीमारियों का प्रकापे कम हो जाता है। दुधारू पशुओं में कई प्रकार के रोग फैलते है। जो निम्नलिखित है।

1. संक्रामक या छूत की बीमारियॉ
2. सामान्य बीमारियॉ
3. परजीवि जन्य बीमारियॉ

बैक्ट्रीरिया, वायरस तथा प्रोटोजोआ से उत्पन्न होने वाले रोग जो एक पशु से दूसरे पशु में फैलते है संक्रामक रोग कहलाते है।जब ऐसे रोग स्वस्थ पशु को रोगी पशु के सीधे सम्पर्क में आने लगते है तो उन्हें छूत के रोग कहते है। जैंसे– ऐन्थ्रेक्स, गलाघोटू लंगड़ीया (B Q) पशु प्लेग (R P) तथा TB - इत्यादि प्रमुख रोग है।

ब्रूसेलोसिस इत्यादि प्रमुख रोग है।

संकामक रोग से बचाव–

1. समय पर संक्रामक रोगों के टीके लगवाना चाहिए।
2. समय पर पशुओं का रागे परीक्षण कराना चाहिए।
3. एन्थ्रेक्स जैसे रोग स` मरे पशुओं के शव का मृत पशु को जमीन मे गहरे गड्ढे में गाड़ना या जला देना उचित होता है।
4. बीमार पशुओं को एकातं में बांधना चाहिए।
5. बीमार पशु को स्वस्थ पशु से अलग रखना चाहिए।
6. डेयरी पर रखे गए सांडो का रोग मुक्त होना व समय समय पर परीक्षण कराना आवश्यक है।
7. ग्वालों व कर्मचारियों का साफ सुथरा व रोग मुक्त रहना चाहिए।
8. शुद्ध व साफ पानी का उपयोग होना चाहिए।
9. पशुओं को मक्खियों व कीकड़ों से बचाया जाना चाहिए।
10. पशुशाला की समुचित सफाई व मलमूत्र एंव गोबर आदि का उचित प्रबन्ध हो।

पशुओं में फैलने वाले प्रमुख रोग–

1. Anthraxi- धुओं में लगने वाला यह एक भयानक रागे है। इसका प्रकोप भेड़–बकरी और घोड़ों में भी हो जाता है। इस रोग से पशु की शीघ्र मृत्यु हो जाती है। गर्मीयों में इसका प्रकापे अधिक हातेा है। यह रोग पशुओं से मनुष्यों को भी लग सकता है। बहुधा लक्षण प्रकट होन से पर्वू ही रोग से ग्रासित पशु की मृत्यु हो जाती है। और चिकित्सा के लिये समय ही नही मिल

एसोसिएट प्रोफेसर– पशुपालन एंव दुग्ध विज्ञान विभाग, श्री मुरली मनोहर टाउन स्नातकोत्तर महाविद्यालय,बलिया (उ0प्र0) भारत

पाता। रोग ग्रसित पशु से निकले वाले द्रव तथा रक्त में ये जीवाणु उपलब्ध रहता है। शरीर से बाहर निकाले पर 02 की उपस्थिती में स्पोर बनने लगते है। दूषित पानी चारा दाना खाने व चारागाह में चरने से ये स्पोर शरीर में प्रवेश करते है। ऊन तथा ब्रश बनाने वाले फैक्ट्रीयों में काम करने वाले लोगो में नाक के द्वारा शरीर में प्रवेश कर बीमारी फैलाते है। इसी लिये इसे ऊल सार्ल्टर डीजिज कहा गया है। पशुओं को काटने वाली मक्खियों जब किसी रोगी पशुओं के खून को चूस कर स्वस्थ पशुओं को काटती है। तो उसमें रोग के जीवाणु प्रवेश कर जाते है। इसकी इन्कीबेशन अवधि 12–24 घण्टे होती है।

लक्षण– 106–1070 ॰ तक तेज बुखार, अत्यधिक बेचैनी,लड़खडाना,काप कर धड़ाके से जमीन परगिरना, तेज श्वास, मुँह नाक तथा मलाशय से रक्त मिला हुआ झाकदार स्त्राव गिरना और कुछ ही क्षणों में रोगी पशु की मृत्यु हो जाना। आदि इस बीमारी के प्रमुख लक्षण है। शाम को अच्छे बान्धे हुए पशु प्रातः अपने बाड़े में मरे मिलते है। पील्हा काफी बड़ जाती है तथा पेटफूल जाता है इसी लिये इसे पील्हा का बुखार भी कहते है।

चिकित्सा– यदि प्रारम्भ काल से ही रोग का पता लग जाये तो 100 से 150 घन सेमी ऐन्टी एन्थ्रेक्स सीरम का इन्जेक्शन देकर पशु को बचाया जा सकता है। पैनसलिन अथवा सल्फामैडिन घोल का इन्जेक्शन लाभप्रद होता है। साथ ही इसके इलाज के लिये ओम्नामाइसीन, म्यूनोमाइसीन, एम्पीसिलीन ओम्लासिलीन, ओरिप्रिय वेट, टेरामाइसीन तथा जेन्टामाइसीन नामक इन्जेशन काफी लाभप्रद सिद्ध हुये है। एंथ्रासीन नामक होम्योपैथिक औषधि भी इस रोग की चिकित्सा में कारगर होती है।

रोकथाम– रोग नियन्त्रण एंव बचाव के लिए संक्रामक रोगो की रोकथाम वाले सभी उपचार करने चाहिए। महामारी फैलने पर स्वस्थ पशुओं को जो रोगी पशु के सम्पर्क में न आये हो ऐन्थ्रकस स्पोर वैक्सीन या पास्चर डबल वैक्सीन का टीका देना चाहिए।

2–गलाघोटू–(H S) – यह एक जानलेवा संक्रामक रोग है। गौवंश में यह रागे एक छूत के बैक्टीरिया पास्च्युरेल्ला बोवीसेप्टिका तथा भैसों में पास्च्युरेल्ला बुवैलीसेप्टिका द्वारा फैलता ह। प्रायः गायों भैसों में वर्षा ऋतु में इसका प्रकोप अधिक हातेा है। जिससे मृत्युदर अधिक होती है। बाढ़ ग्रस्त क्षेत्रों में तथा जलभराव वाले जगहो में इस बीमारी के जीवाणु अधिक समय तक रहते है। बहुधा 1–3 दिन में इस बीमारी के लक्षण प्रकट होते है–

लक्षण– एकाएक 104 से 1080 फारेनहाइट का तेज बुखार, ऑखे लाल और जानवर कॉपने लगता है। पशु एकदम सुस्त हो जाता है और खाना पीना बन्द कर देता है। अचानक दूध घट जाता निस्तारण का उचित प्रबन्ध करना चाहिए। है तथा जबड़ों और गले के नीचे सुजन का जाती है जिससे उसको सॉस लेन मे कठिनाई होने लगती है। घुर्र–घुर्र की आवाज आती है,जीभ सूजकर बाहर निकल आती है। लार टपकती है और 1–2 दिन के भीतर ही पशु की मृत्यु हो जाती है।

चिकित्सा–

1. एक बार लक्षण प्रकट होने पर अधिकांश पशु मर जाते है।
2. रोगी पशु को 100–150CC ऐन्टी सीरम का इन्जेक्सन देने से लाभ होता है।
3. 4 ग्राम पोटाश आइयोडाइट को 300 घन सेमी डिस्टल वाटर मे घोल के त्वचा के नीचे इन्जेक्स्न देने से सुजन कम हो जाती है। रोग की पुरानी अवस्था में पशु को 20–40 ग्रेन पोटाश पानी मे कई बार मिलाकर पिलाना चाहिए। सल्फा औषधियों प्रयुक्त की जा सकती है।

रोकथाम– बरसात आने से पहले पशु का गलाघोटूं टीका अवश्य लगवायें।स्वस्थ पशुओं से बीमार पशुओं को अलग रखें पशु आहार चारा पानी आदि का रोगी पशु से दुर रखे। उपचार और परामर्श के लिये पशुचिकित्सक से तत्काल सलाह लेनी चाहिए।

Black Quarter (लंगड़ा बुखारद्ध गाय,भैस,भेड़ों में फैलने वाली यह एक छूत दार,बैक्टीरियल बीमारी है।

इसमें मसीले भाग में गैंस भरी सूजन आकार पशु को बेचैन कर देती है। यह रोग पशु के अगले कन्धे अथ्वा पिछले पुट्ठे पर होकर उसको लंगड़ा बना देता है। एक से तीन दिन में पशु शत–प्रतिशत रोग ग्रासित होकर परलोक सिधार जाते है। वर्षा ऋतु में इस रोग का प्रकोप अधिक हातेा है। 6 माह से 3 वर्ष के गौवंश पशु अधिक ग्रसित होते है। भैसों में इसके हल्के लक्षण होते है।

लक्षण– सर्व प्रथम पशु अन्य पशु से अलग खड़ा होता है।खाना पीना तथा जुगाली बन्द करके सुस्त रहने लगता है। 107 से 1080 तक तेज बुखार जॉघों के ऊपर कन्धे या गर्दन पर दर्द सूजन पहले लगं ड़ाता है। रंभाना व दॉत पीसना बाद में चलने–फिरने में असमर्थ हातेा जाता है। सूजन जल्दी–जल्दी बढ़ने लगती है। पशु का बुखार गिर कर कभी–कभी नार्मल से कम तापक्रम हो जाता है। तापक्रम का गिरना मृत्यु का सूचक है। प्रायः 12 से 40 घंटे में रोगी पशु मर जाता है। सूजन के अन्दर गैस भरी रहती हैं। अतः इस स्थान को दबाने से चूर–चुर की आवाज आती है।

चिकित्सा – रोग के प्रारम्भ में ही प्रौढ़ पशु को 20–40 लाख युनिट पेनिसिलीन का इंजेक्शन लगाया जाता है। पशु को ।दजप ठफै मतनउ 100–200 बब का इंजेक्श्ज्ञन देना चाहिए। रोग हो जाने पर इलाज कराना उपयोगी नही होता है। पशु चिकित्सक से उचित सलाह लेनी चाहिए।

रोकथाम– जिस क्षेत्र में ये बीमारी होती रहती है वहॉ पशुओ को नियमित टीका लगवाना चाहिए। पशु को दूषित भूमि व चारागाह से अलग रखना चाहिए।

स्वस्थ पशुओं को 6 माह की आुय से पर्वू टीका लगवाना चाहिए तथा 3 वर्ष तक प्रति वर्ष टीको को दोहे राना चाहिए। मृत्यु के बाद पशु को गहरा गड्ढा खोद कर चूना डालकर गाड़ देना चाहिए या जला देना चाहिए जिससे इस रागे के कीटाणु आस पास के स्वस्थ पशुआं ` को प्रभावित ना कर सके।

4.Foot and thouth disease- (खुर पका–मुँह पका रोग)– शीघ्र फैलने वाला यह वायरस द्वारा फैलाने वाला एक संक्रामक रोग है। जो बहुधा जुगाली करने वाले पशुओं में हातेा है। गाय भैंस, बकरी, भेड़ तथा सुअरों में भी ये रोग खूब फैलता है। रोग गसित पशु बहुत निर्बल हो जाते है जिससे उनकी उत्पादन क्षमता कम हो जाती है।

मृत्यु दर कम होते हुए भी देश की अर्थव्यवस्था को भारी क्षति पहुॅचती है। यह रोग ग्रस्त पशुओं से स्वस्थ पशुआ ं में केवल संपर्क से ही नही वरन चारा दाना पानी तथा हवा से भी फैलता है। मादा पशुओं में दुग्ध उत्पादन क्षमता तथा गर्भ धारण क्षमता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

लक्षण– छूत लगकर पशु को जाड़ा बुखार आता है। पशु का तापक्रम 104 से 105 डिग्री फारेनहाइट ; 40 से 40.6 से और कभी–कभी इससे भी अधिक हो जाता है। पशु खाना–पीना तथा जुगाली करना बन्द कर देता है। मुॅह से लार बहने लगती है और होठों से चपचपाहट की आवाज होती है। पशु बिल्कुल सुस्त होकर नीचे गर्दन डालकर खड़ा हो जाता है। खुर्र के बीचों–बीच और मुॅह के अन्दर, गालों, जीभ, होठ, तालू तथा मसूड़ो पर छाले पड़ जाते है।

चिकित्सा–

1. रोगग्रसित पशु के मुॅह के छालों को किसी अच्छे ऐंटीसेप्टिक लोशन जैसे पोटाश, फिटकरी, बोरिक ऐसिड, फार्मलीन, सुहागा इत्यादि के घोलों से धानो चाहियें।
2. मुॅह के छाले धोने के उपरान्त 1 भाग सुहागा,4 भाग शहद मिलाकर छालों पर लपे करने से बहुत शीघ्र आराम होने लगता है।
3. पैरों के छालों पर 1 प्रतिशत तुतिया या फिनायल का घोल दिन में कई बार डालना चाहिए।
4. लाल दवा; पोटेशियम – परमैंगनेट के 1: 1000 के घोल से मुॅहपका–खुरपका के धावों को धोंयें
5. पशुचिकित्सक से सलाह लें।

रोकथाम– सारे पशुओं को नियमित रूप से टीका लगाना चाहिए। जिस गॉव में बीमारी मौजूद हो वहॉ टीकाकरण न करवायें । बीमार जानवरो को

स्वस्थ जानवरों से अलग कर साफ–सुथरे और सूखे स्थान पर रखना चाहिए और उन्हें इधर–उधर घूमने नही देना चाहिए।

5.पशु प्लेग (Rinderpest R.P) यह एक वायरस द्वारा फैलने वाला बहुत ही भयानक संक्रामक रोग है। जिसके प्रकोप से लाखों पशु प्रति वर्ष मौत के घाट उतर जाते है। यह प्रायः सभी जुगाली करने वले पशुओ को विशेष रूप से हुआ करता है। गाय की अपेक्षा मैस अधिक ग्रहणशील है परन्तु बकरियों तथा भेड़ों में भी यह रागे देखा गया है। कैटिल प्लेग बहुत ही शीघ्र एक पशु से दूसरे पशु में एक वायरस द्वारा फैलता है।

लक्षण– थरथराहट के साथ तेज बुखार, जीभ के नीचे मुँह के अन्दर तथा मसूड़ों से ऊपर महीन–महीन दाने निकलना और उनका फूटकर घाव बन जाना। इसके बाद पतले ऑव मिले बदबुदार दस्त होती है।

चिकित्सा– रोग का पूर्ण रूप से आक्रमण होने पर पशु बहुधा मर जाता है। अतः चिकित्सा का पशु का विशेष महत्व नहीं है। रोग के प्रारम्भ होने पर ही चिकित्सा हो जाये तो कभी–कभी आशातीत लाभ हो जाता हे। इसके उपचार के लिए पशु चिकित्सक से तत्काल सलाह लेनी चाहिए।

रोकथाम– लक्षण दिखते ही निकटतम पशु चिकित्सालय को सूचना देनी चाहिए। रोगी तथा उसकेसम्पर्क में आए हुए सभी पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखना चाहिए। स्वस्थ पशुओं को पशु–प्लेग वैक्सीन का टीका देना चाहिए।

6.Mastitis- यह रोग थन पर चोट लगने या कट जाने से होता है। संक्रामक जीवाणुओं का थन में प्रवेश कर जाने व गन्दे व दलदली स्थान पर बॉधने तथा दुहने वाली असावधानी के कारण जीवणु थन में प्रवेश कर जाते है। अधिक दूध देने वाल गाय तथा भैंस इसका अधिक शिकार हातेहै।

लक्षण– थन गर्म एंव लाल हो जाना , उसमें सूजन होना,शरीर का तापमान बढ़ जाना,भूख न लगना , दूध कम हो जाना, दूध का रंग बदल जाना, दूध में जमावट हो जाना इस रोग के प्रमुख लक्षण है।

चिकित्सा– पशु को हल्का एंव सुपाच्य आहार देना चाहिए। सूजे स्थान को सेकना चाहिए। रोगग्रसित फूले हुये अयन पर आयेडिन मरदम, सूमेग बेलाडोना ग्लैसरीन पस्टे लगाकर सकें न से लाभ होता है। गरम पानी में मैंगसल्फ, बोरिक एसिड अथवा नीम की पत्तियॉ डालकर भी अयन को सेका जा सकता है। ऐंटीसेप्टिक तथा सल्फा ड्रग का प्रयोग करना चाहिए।

रोकथाम– थनो के बाहरी चोट लगने से बचाएँ। पशु घर के फर्श को सूखा रखे,समय–समय पर चूने का छिड़काव करें तथा मक्खियों पर नियंत्रण करे। दूध–दुहने के लिए पशु को अलग स्थान पर ले जाए। दूध दुहने से पहले थनों को खूब अच्छी तरह से साफ पानी से धोना न भूलें। दूध जल्दी से और एक बार में ही दुहे। ज्यादा समय न लगायें। दूध दूहने से पूर्व साबुन से अपने हाथ धों लें। दुध दुहने के पश्चात् थनों को कीटनाशक घोल जैसे कि आइडोफोर में डुबायें या घोल का स्प्रे करे।

दुध दुहने के तुरन्त बाद दुधारू पशुओ को पशुआहार दें जिससे कि वे कम से कम आधा घंटा फर्श पर न बैंठे।

7.दुग्धज्वर (Milk Fever)- यह रोग अधिक दूध देने वाले पशुओं का ब्यान के 2–3 दिन के अन्दर ही हाते ा है। परन्तु ब्याने के पूर्व या अधिकतम उत्पादन के समय भी हो सकता है। पशु के रक्त में और फलस्वरूप मांसपेशियों में कैल्शियम की कमी इसका मुख्य कारण होता है।

लक्षण– 1. पशु के रक्त में 8 मिग्रा–प्रति 100 घ0से0 से कम हानेा ।

2. इस रोग में ज्वर नहीं होता बल्कि कभी कभी स्वस्थ पशु के ताप से रोगी का ताप कुछ कम ही हो जाता है।

3. पशु खाना–पीना छोड़ देता है।

4. उसके सींग, कान, थन व पैर ठंडे पड़ जाते है।

5. पशु लड़खड़ाता है। जमीन पर बैठ जाता है। और अपनी गरदन को घुमाकर पीछे की और कर लेना इस बीमारी का प्रधान लक्षण है।

6. पशु को श्वास लेने में कष्ट होता है।

रोकथाम–

1. विटामीन डी की पूर्ति हेतु पशु को मौसम देखते हुए कुछ समय घूप में भी रखना चाहिए।

2. ब्याने के एक माह पूर्व अधिक कैल्शियम तथा फास्फोरस युक्त आहार खिलाने से इस रोग की सम्भावना नहीं रहती है।

3. सूखी घास तथा चारा खिलाना लाभप्रद होता है

चिकित्सा–

1. यह रोग कैल्शियम की कमी के कारण होता है। 25% कैल्शियम बोरोग्लूकोनेट का घोल 200–260 घं0से0 गाय,भैस को तथा 20–30 घं0से0 भेड़,बकरियों को अन्तः शिरा में इजेंक्शन देने से जादू जैसा असर करता है। थनो से पूरा दूध निकालने के बाद उनमें थन साइफन डाल कर पंप द्वारा हवा या आक्सीजन चढ़ाई जाती है। इसके बाद थनों पर टेप लगा दिया जाता है। अयन का खूब मर्दन किया जाता है। और टेप खोल दिया जाता है। दबाव के कारण कैल्शियम पुनः रक्त प्रणाली में वापस जाकर कमी को पूरा कर देता है और पशु 15–20 मिनट में उठ बैठता है। कैल्शियम बोरोग्लूकोनेट तथा डेक्सट्रोज घोल का इन्जेक्शन देने से भी लाभ होता है।

रोकथाम–

7.Brucellosis संक्रामक गर्भपात– यह पशुओं का एक भयानक संक्रामक रोग है। जिसमें गर्भित पशु का गर्भाशय सूजकर उसमे ं उपस्थित भ्रूण का गर्भपात हो जाता है। बॉझपन की संभावना रहती है गाय भैसों बहुधा 5–8 वें माह तक ही उनका गर्भ गिर जाता है। भैसों की अपेक्षा गायों को यह रोग अधिक लगता है। रोगी पशु के संपर्क में आने अथवा उसका दूध पीने से मनुष्यों में भी ये बीमारी लग जाती है। जिसे उतार–चढ़ाव वाला ज्वर Undulent मिअमत भी कहते है।

लक्षण– पशु को काफी तेज बुखार, सुस्ती, बेचैनी, शारीरिक निर्बलता, भूख की कमी, कष्टप्रद श्वांस–प्रश्वांस तथा 5 वें से 8 वें माह में गर्भपात होना आदि। रोगग्रसित पशु का गर्भवस्था के अन्तिम तीन माह में गर्भपत होना सबस प्रधान लक्षण है। गर्भपात के पश्चात् जेर रूक जाती है। जिसके सड़ने से पशु की मृत्यु भी हो सकती है। शरीर के निचले भाग उदर,तथा जोड़ों में सूजन सी मालूम पड़ती है।

चिकित्सा– इस रोग का कोई लाभदायक उपचार नहीं है। तथा रोकथाम के उपायो पर पूरा ध्यान देना चाहिए। गर्भपात होने के उपरान्त गर्भाशय को हल्का पोटाश परमैंगनेट लोशन या डिटोल जैसे एन्टिसेप्टिक घोल से धोकर,उसमे कैम्प्रान, हिंबोटेन फ्यूरिया, बोलस जैसी योनिवत्ति रखकर पशु को कुछ लाभ पहुॅचाया जा सकता है। फाइजर द्वारा निर्मित मेस्टालान यू या यूराटे ेन दवा इसकी चिकित्सा में काफी लाभप्रद पायी गयी है।

रोकथाम– रोग ग्रसित पशु को स्वस्थ पशुओं से तुरन्त अलग कर देना चाहिए। 4–8 माह के बछियों को टीका लगवाना चाहिए। गिरे हुए भ्रूण ा,जरे तथा उसके संपर्क में आए हुए सभी पदार्थों को जलाकर अथवा गहरे गड्ढे में गाड़कर ऊपर से चूना डालकर नष्ट कर दनो चाहिए। रोगी पशु के पिछले भाग को एंटी सेप्टिक लोशन से खूब साफ करना चाहिए। जिस बाड़े मे पशु बांधा गया व उसका जिस स्थान पर गर्भपात हुआ हो उस फर्श को फिनाइल से खूब धोकर उसके जीवाणु रहित करना चाहिए।